Padma Vibhushan



Dr. Dharmasthala Veerendra Heggade

Dr. D. Veerendra Heggade is the Dharmadhikari of Shri Manjunatha Swamy temple, Dharmasthala which is well known for spiritual and philanthropic services.

2. Born on November 25, 1948, Dr. Heggade became the Dharmadhikari at a tender age of twenty as the 21st Heggade of the 600 year old Manjunatha Swamy temple. Ever since, he has been guiding the multitude of devotees visiting Dharmasthala and seeking solace for their pains. He is a multifaceted personality excelling in service to God as the head of the temple and a shrewd administrator as the chief of the many programmes promoted by him. Infrastructures built by Dr. Heggade in Dharmasthala provide quality lodging facilities to 20,000 devotees every day. The kitchen of Dharmasthala and the huge Annapoorna dining hall can feed 5,000 people in ten minutes. He is the architect of modern Dharmasthala. As Dharmadhikari, he has been performing four types of charity i.e. free food for the thousands of visiting devotees (Annadaan), education (Vidya daan), medicines (Aushad daan) and assurance from fear (Abhaya daan). He is also the Chairman of Shri Dharmasthala Manjunatheshwara (SDM) group of educational institutions, Rural Development Self Employment Training Institutes (RUDSETI), Shri Kshethra Dharmasthala Rural Development Project (SKDRDP), SDM Medical Trust, Shanthivana trust and Dharmothana trust.

3. Dr. Heggade started the concept of mass marriages in 1972 to help the poor people in the marriage of their children without getting into debt trap. He has promoted world class educational institutions ranging from primary schools to professional institutions in Engineering, Management, Ayurveda, Naturopathy and Allopathic medicine. They provide quality education to 30,000 students every year. Dr. Heggade's work in the sphere of enterprise creation and poverty alleviation are quite unique and outstanding. The Rural Development Self Employment Training Institute (RUDSETI) conceived and promoted by Dr. Heggade is a joint venture between Dharmasthala and nationalised Syndicate and Canara banks. The RUDSET trains the unemployed youth and handholds them to become self employed. Started in the year 1982, the RUDSET concept has become a national programme with the Govt. of India advising all the banks to open one RUDSET in each district of the country. The national academy of RUDSETI promoted by the Govt. of India has been using the services of Dr. Heggade as its Chairperson.

4. The Shri Kshethra Dharmasthala Rural Development Project (SKDRDP), another well known experiment of Dr. Heggade is engaged in organising the small farmers, the poor women into Self Help Groups (SHG) for accessing various services at their door steps. This programme has mobilized 300,000 small farmers and 30,00,000 poor women to setup livelihoods and walk beyond absolute poverty. He has promoted Janajagruthi forum to combat the dreaded problem of alcoholism among the working class. The forum has de-addicted more than 50,000 men and women to provide lasting solutions to their families. He has developed a cadre of workers who understand the needs of the poor. Dr. Heggade has encouraged innovations at all levels and has not shied away from deploying technology with the changing times, for helping the poor. Through Shanthivana trust Dr. Heggade has popularized practice of yoga and naturopathy in daily life and for treatment. He is also connoisseur of ancient temple architecture. He has promoted the Dharmothana Trust which has renovated more than 200 historic buildings.

5. Dr. Heggade has received various awards and honours including Padma Bhushan in the year 2000; the Karnataka Rathna, the highest civilian honour by the Govt. of Karnataka in 2009. He has received four doctorates from different universities. He is the honorary Fellow of Royal College of Physicians (FRCPs) of the University of Glasgow, U.K.



डॉ. धर्मस्थल वीरेन्द्र हेग्गडे

डॉ. धर्मस्थल वीरेन्द्र हेग्गडे श्री मंजुनाथ स्वामी मंदिर, धर्मस्थल के धर्माधिकारी हैं, जो अध्यात्मिक और परोपकारी सेवाओं के लिए सुविख्यात है।

2. आपका जन्म नवम्बर 25, 1948 को हुआ। आप 600 वर्ष पुराने मंजुनाथ स्वामी मंदिर के 21वें हेगड़े के रूप में बीस वर्ष की कम आयु में ही धर्माधिकारी बने। तब से लेकर आप धर्मस्थल की यात्रा करने वाले बहुसंख्य यात्रियों तथा अपने दुखों के कारण शांति की तलाश में आने वाले व्यक्तियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, जो मंदिर के मुखिया के तौर पर ईश्वर की सेवा के साथ-साथ अपने द्वारा चलाए गए विभिन्न कार्यक्रमों के प्रणेता के रुप में कुशल प्रशासक की भूमिका बखूबी निबाह रहे हैं। धर्मस्थल में आपके द्वारा तैयार की गई बुनियादी सुविधाओं के कारण प्रति दिन 20,000 तीर्थयात्रियों के रहने की अच्छी सुविधा उपलब्ध हो सकी है। धर्मस्थल की रसोई तथा बड़े अन्नपूर्णा डाइनिंग हॉल में दस मिनटों में 5,000 व्यक्ति भोजन ग्रहण कर सकते हैं। आप आधुनिक धर्मस्थल के निर्माता हैं। धर्माधिकारी के रूप में आप चार प्रकार के धर्मार्थ कार्यों अर्थात् यात्रा करने वाले हजारों तीर्थयात्रियों को नि:शुल्क भोजन (अन्न दान), शिक्षा (विद्या दान), दवाइयां (औषध दान) तथा भय के प्रति आश्वस्त करना (अभय दान) का निर्वहन कर रहे हैं। आप श्री धर्मस्थल मंजुनाथेश्वर (एस डी एम) समूह के शैक्षणिक संस्थानों, ग्रामीण विकास स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थानों (आर यू डी एस ई टी आई), श्री क्षेत्र धर्मस्थल ग्रामीण विकास परियोजना (एस के डी आर डी पी), एस डी एम मेडिकल ट्रस्ट, शांतिवन ट्रस्ट और धर्मोत्थान ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं।

3. आपने निर्धन लोगों की सहायता हेतु बिना ऋण के जाल में फंसे उनके बच्चों के विवाह के लिए वर्ष 1972 में सामूहिक विवाह की अवधारणा आरंभ की। आपने प्राथमिक विद्यालयों से लेकर इंजीनियरी, प्रबंधन, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा तथा एलोपैथिक चिकित्सा के विशेषज्ञ संस्थानों तक विश्वस्तरीय शैक्षणिक संस्थानों को प्रोत्साहित किया है। यहां पर प्रत्येक वर्ष 30,000 छात्र गुणवत्तापरक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। उद्यम-सृजन तथा गरीबी उपशमन के क्षेत्र में आपके द्वारा किए गए कार्य विशिष्ट और असाधारण हैं। आपके द्वारा विकसित और प्रोत्साहित ग्रामीण विकास स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थान, धर्मस्थल तथा राष्ट्रीयकृत सिंडिकेट तथा कैनरा बैंकों का एक संयुक्त उपक्रम है। यह संस्थान बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षित करता है तथा स्व-रोजगार प्राप्त करने में उनकी सहायता करता है। वर्ष 1982 से आरंभ की गई ग्रामीण विकास स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थानों की अवधारणा अब एक राष्ट्रीय कार्यक्रम का रूप ले चुकी है, जहां भारत सरकार ने सभी बैंकों को देश के प्रत्येक जिले में एक ग्रामीण विकास स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने की सलाह दी है। भारत सरकार द्वारा प्रोत्साहित ग्रामीण विकास स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थानों की राष्ट्रीय अकादमी, बतौर अध्यक्ष आपकी सेवाओं का लाभ उठा रही है।

4. आपकी एक अन्य सुविख्यात पहल श्री क्षेत्र धर्मस्थल ग्रामीण विकास परियोजना, सीमान्त किसानों, निर्धन महिलाओं को स्व-सहायता समूहों में संगठित करने का कार्य कर रही है ताकि उन्हें उनके समीप ही विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सके। इस कार्यक्रम के माध्यम से 3,00,000 सीमान्त किसानों तथा 30,00,000 निर्धन महिलाओं को अपनी आजीविका ढूँढने तथा गरीबी के जाल से बाहर आने में मदद मिली है। आपने कामगारों के बीच नशे की भयावह समस्या से निजात पाने के लिए जनजागृति फोरम की स्थापना की है। इस फोरम के कारण 50,000 से अधिक पुरुष और महिला नशा मुक्त होकर अपना पारिवारिक जीवन खुशहाल कर पाए हैं। आपने ऐसे कार्यकर्ताओं का काडर तैयार किया है जो निर्धन लोगों की आवश्यकता को बखूबी समझता है। आपने गरीब लोगों की सहायता के लिए सभी स्तरों पर नवीन प्रयोगों को प्रोत्साहित किया है तथा प्रौद्यिगिकी के उपयोग से झिझके नहीं हैं। शांतिवन ट्रस्ट के जरिए आपने दैनिक जीवन में तथा उपचार के लिए योग तथा प्राकृतिक चिकित्सा के उपयोग को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है। आप प्रचीन मंदिर वास्तुविद् के पारखी भी हैं। आपने धर्मोत्थान ट्रस्ट के माध्यम से 200 से अधिक ऐतिहासिक भवनों का पुनरुद्धार करवाया है।

5. आपको अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें वर्ष 2000 में पद्म भूषण, वर्ष 2009 में कर्नाटक सरकार द्वारा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान कर्नाटक रत्न शामिल हैं। आपको विभिन्न विश्वविद्यालयों से चार डॉक्टरेट उपाधियों से सम्मानित किया गया है। आप ग्लासगो विश्वविद्यालय, यू.के. के रॉयल कॉलिज ऑव फिजिशियन्स (एफ आर सी पी) के मानद् फैलो हैं।